संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

# आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ५१ ● २६ दिसम्बर, २०१५ पौष कृष्ण चतुर्थी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १९१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११६

# भारत के मूल निवासी आर्य हैं और गाय अवध्य है इसे जन जन में प्रसारित करना हमारा दायित्व है।

## जंतर मंतर नई दिल्ली में आर्यो का धरना प्रदर्शन

देवेन्द्रपाल वर्मा

दिनांक १६.१२.१५ को जन्तर मंतर नई दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के निर्देशानुसार गोवध बंदी एवं

गौमांस विक्रय तथा केन्द्रीय मंत्री के भारतीय बाहर से आये कहे वक्तव्य के विरोध में धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया। जिसमें भारी संख्या में आर्य नर नारियों ने भाग लेकर इसके विरूद्ध आवाज उठायी और केन्द्र सरकार को इन कार्यो को तुरंत बंद कराने के लिए राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री जी के नाम ज्ञापन सौंपा गया। आर्य नर नारियों ने इसके विरूद्ध पुतला भी फूंका।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा ने भी यहां धरने में भाग लेकर आर्य नर नारियों को आर्य समाज का गोवध निषेध का महर्षि दयानन्द द्वारा गो करूणानिधि पुस्तक में वर्णित आर्थिक संबर्धन का उल्लेख करते हुए इसकी अनिवार्यता पर प्रकाश डाला तथा कहा कि भारत के मूल निवासी आर्य ही हैं। अंग्रेजों ने हमें गुलाम रखने की भावना से हमारा इतिहास ही बदल डाला। जिसमें उन्होंने आर्य बाहर से आये लिखकर आर्यो को विदेशी प्रचारित किया। आजादी के इतने वर्षो बाद भी हमारी सरकारों ने सत्य इतिहास को पूर्व इतिहास ग्रन्थों से देख व पढ़ कर सत्य

इतिहास प्रकाशित नहीं किया है और उसी असत्य इतिहास को आज भी हमारे बच्चों को पढ़ाया जा रहा है इसी कारण केन्द्रीय मंत्री ने आर्य बाहर से आये-कहकर हमें अपमानित किया। केन्द्र सरकार का दायित्व है सत्य इतिहास को शिक्षा में पढ़ाने के लिए अविलम्ब सत्य इतिहास के निर्माण के लिए एक विद्वानों की समिति का गठन करके जो समिति गम्भीरता से पूर्व इतिहास को खंगाल कर अंग्रेजों द्वारा झूठे गढ़े इतिहास को हटाकर सच्चे इतिहास को पढ़ाने की व्यवस्था करें।

वेदों में गाय को 'अध्न्या' कहा है अर्थात् उसे नहीं मारा जाना चाहिए। आज मांस

भक्षण की आदत जीभ के स्वाद के लिए बनती जा रही है। मांस भक्षण से मन में क्रूरता आ जाती है। उसी का परिणाम आज सर्वत्र लड़ाई झगड़ों का होना है। सरकार धन के लालच में मांस की बिक्री विदेशों में धन प्राप्त करने के लिए उसकी सप्लाई का कारोबार चला रही है।

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन काल में ही गौ वध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए अंग्रेजी सरकार को ज्ञापन दिलाया था और गौ करुणानिधि पुस्तक लिखकर आर्थिक दृष्टिकोण से गौ की रक्षा का महत्व हमें बताया है।

अतः गौहत्या गौमांस विक्रय और आर्यो को विदेशी कहकर अपमानित करने पर पूर्ण प्रतिबन्ध की आवश्यकता है।

## वेदामृतम्

स्वाध्यो दिव आ सप्त यही रायो दुरो व्यृतज्ञा अजनानन्।
विदद् गव्यं सरमा दृष्टमूर्व येना नु कं मानुसी भोजते विट्।।

प्रस्तुत वेद मंत्र में बुद्धि को शुद्ध रखने का प्रयत्न करने की प्रेरणा की गई है। इन्द्रियों की निर्दोषता ही सुख है। मु-उत्तम, ख-इन्द्रियां। इन्द्रियों को दूषित होना ही दुख का कारण है। सत्य ज्ञान को अपनाने वाले ज्ञानेश्वर्य का सात महान द्वारों(कान, नाक, आंख, मुख) से ज्ञान प्राप्ति के लिये यत्नशील होते हैं। वे बुद्धि के द्वारा इन्द्रियों को निर्दोष बनाते हैं। बुद्धि मन का शासन करती है। मन इन्द्रियों का। इस प्रकार इन्द्रियां विषय चक्र में फंसने से बच जाती है।

हमारी इन्द्रियां ज्ञान रूप ऐश्वर्य का द्वार बनें। इसके लिए बुद्धि को शुद्ध बना इन्द्रियों का निर्दोष रख सुख प्राप्त करें।

कर्मो के बिना सुख नहीं मिलता।

## पं. मदन मोहन मालवीय जी की जयन्ती

हिन्दी के प्रखण्ड विद्वान पं. मदन मोहन मालवीय जी की जयन्ती दिनांक २५ दिसम्बर को सारे देश में मनायी गयी। भारतीय संस्कृति के लिए सर्वात्मना समर्पित हिन्दू विश्व विद्यालय काशी के संस्थापक सदैव अभिनन्दनीय हैं।

आर्यमित्र परिवार की तरफ से शत शत नमन एवं बधाई।

सम्पादक-मुद्रक व प्रकाशक
आर्य मित्र साप्ताहिक

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

# सम्पादकीय.....

## मानव जीवन निर्माण का प्रमुख साधन वेदों का पठन पाठन और स्वाध्याय है।

आज चारों ओर अराजकता का तांडव हो रहा है। राह चलते कोई स्त्री पुरुष सुरक्षित नहीं है। नैतिकता स्वप्न सी होती जा रही है। नारी शोषण नारी हत्या, छुआछूत, जाति पांति का भेद, ढोंग पाखण्ड चरम पर है। राजनीतिक नेता अपने वोट के लालच में जाति वाद का भेद बढ़ाने में कार्यरत हैं। राजनीति का प्रयोग देश हित में नहीं बल्कि स्वार्थहित में किया जा रहा है। जीवन में विलासिता बढ़ती जा रही है। शिक्षा स्तर गिर रहा है, डिग्रियां मात्र योग्यता का मापदण्ड बन रही है।

देश को स्वतंत्र हुए ६८ वर्ष हो गये। आज भी वही शिक्षा जो भारत को सदा गुलाम बनाकर रखने के लिए अंग्रेजों ने चलाई थी पूरी ऊर्जा से चलाई जा रही है। जबकि आजादी के साथ ही विदेशी शिक्षा व्यवस्था बदल देनी चाहिए थी। हमारे देश के नेता जो सत्ता में आये वे उसी शिक्षा से शिक्षित थे उन्होंने अपना ध्यान देश की भौतिक समृद्धि पर केन्द्रित कर दिया। भारत सरकार में शिक्षा विभाग भी है जो आज मानव संसाधन विकास मंत्रालय नाम से कार्यरत है। परंतु वह भी इस ओर अपना ध्यान नहीं लगा पा रहा यदि वर्तमान सरकार नैतिक मूल्यों के सुधार के लिए कुछ करने की योजना बनाती है तो वह योजना साम्प्रदायिकता के नाम पर सदन में पास नहीं होने दी जाती। फलतः देश में मानवीय भावना के स्थान पर दानवीय व्यवस्था अपना स्थान बनाती जा रही है।

मानव संसाधन मंत्रालय को देश की इस दुर्दशा पर गंभीरता से चिंतन करने की आवश्यकता है। महर्षि स्वामी दयानन्द ने पराधीनता के मूल में वेद ज्ञान के अभाव को मानकर सभी से वेदों की ओर लौटो का उद्घोष करके मार्ग दर्शन किया और सतत वेद प्रचार से मानव जीवन निर्माण की ऊर्जा फैलाने के लिए और स्वाधीनता हमारा अधिकार बताने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। उनका उद्घोष रंग लाया और आर्य समाज द्वारा समाज में जागृति आने लगी। स्वाधीनता आंदोलन में ८० प्रतिशत आर्यो ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। स्वाधीनता के बाद यदि शिक्षा व्यवस्था बदलकर भारतीय वेदाधारित शिक्षा पद्धति चला दी गयी होती तो देश में नैतिकता का ह्रास न होता। परंतु मानव से भूल तो हो जाती है तो उसके सुधार का भी प्रयत्न होता है।

मेरा देश के सभी कर्णधारों विशेष कर मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार से विनम्र अनुरोध है कि देश में निरन्तर नैतिकता की गिरावट पर गंभीरता से ध्यान देकर उन कारणों को समाप्त करने के लिए अविलम्ब कार्यवाही करें। मेरी दृष्टि में इसका मुख्य उपाय अंग्रेजों की चलाई शिक्षा व्यवस्था को अविलम्ब समाप्त करके वेदाधारित शिक्षा पद्धति चालू करें जिसमें सम्पूर्ण विज्ञान निहित हैं के आधार पर प्रबुद्ध शिक्षा शास्त्रियों की समिति बनाकर उसका निर्माण करें और उसका शिक्षण सभी विद्यालयों में अनिवार्यतः लागू करें निश्चय ही गर्हित साम्प्रदायिक भावना वाले एवं कम्युनिस्ट विचारों वाले इस उत्तम शिक्षा पर अपनी अपनी तरह की आपत्तियां करेंगे परंतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय निष्पक्ष रूप में देश हितकारी शिक्षा पद्धति चलाने में संकोच न करें। निश्चय ही ऐसा करने से देश में नैतिकता का अभ्युदय होगा। मानव जीवन निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा और हमारा देश सारे विश्व में मानवीय गुणों का प्रसारक और संरक्षक बनेगा।

सम्पादक

### सम्पादकीय टिप्पणी

## श्री अरविन्द केजरीवाल ने प्रधानमंत्री के प्रति अभद्र शब्दों का प्रयोग करके अपने पद को ठेस पहुँचाई है।

दिनांक १६-१२-२०१५ के समाचार पत्रों में उनकी सरकार के एक उच्च अधिकारी के कार्यालय पर सी.बी.आई के छापे को राजनीतिक रूप देने के लिए श्री अरविन्द केजरीवाल मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति अभद्र भाषा का प्रयोग करके अपने पद की गरिमा को ठेस पहुँचाई है। जबकि सी.बी.आई. की कार्यवाही विगत वर्षो की सरकारों के समय से उच्च अधिकारी के तथाकथित अनुचित क्रिया कलापों की जांच एक कानूनी प्रक्रिया में सी.बी.आई. कर रही है। ताकि वह सही सही जांच करके दूध का दूध व पानी का पानी सिद्ध कर सके और अपराधी को दण्डित किया जा सके।

परन्तु ऐसा करके मुख्यमंत्री पद पर आसीन श्री अरविन्द केजरीवाल ने जांच को प्रभावित करने का प्रच्छन्न अपराध किया है, उन्हें अपने वक्तव्य पर खेद प्रकट करना चाहिए।

किसी भी न्यायिक प्रक्रिया में राजनेताओं, मंत्रियों के भाषणों से दुष्प्रभाव पड़ सकता है अतः सभी को ऐसे भाषणों व वक्तव्यों से बचना चाहिए। -सम्पादक

# प्रत्याहार से समाधि

-प्रताप कुमार 'साधक', लखनऊ

योगदर्शन में वर्णित अष्टाग्ड़ योग के २ भाग हैं- (१) बहिरंग योग, जिसके अन्तर्गत यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार तथा (२) अन्तरंग योग, जिसके अन्तर्गत धारणा ध्यान और समाधि को सम्मिलित किया गया है। योग का अन्तिम उद्देश्य ईश्वर साक्षात्कार है और उस को प्राप्त करने का उपाय है - चित्त-वृत्तियों का निरोध जैसा योगदर्शन के दूसरे सूत्र में ही स्पष्ट कर दिया गया है - ''योगश्चित्तवृत्ति निरोधः। किन्तु चित्तवृत्तियों का निरोध अत्यन्त कठिन है, जो लम्बे काल तक निरन्तर अभ्यास करने से ही सम्भव हो पाता है। अन्तरंग-साधना का क्रम धारणा से प्रारम्भ होता है जो ध्यानावस्था से होकर समाधि तक पहुँचता है। अन्तरंग साधना भी बहिरंग - योग के बिना सम्भव नहीं है। अतः ऐसा भ्रम न रहना चाहिये कि यम, नियमों का पालन किए बिना कोई व्यक्ति धारणा, ध्यान और समाधि की स्थिति प्राप्त कर सकता है। यम, नियमों के पालन करने से योगाभ्यास करने की पात्रता आती है, आसनों से शरीर योगाभ्यास के लिए अनुकूल बनता है और प्राणायाम से प्राणों पर वशित्व प्राप्त होता है, जिससे मनोनिग्रह करने में सहायता मिलती है। मनोनिग्रह के लिए प्रारम्भिक प्रयास को ही प्रत्याहार कहा जा सकता है। प्रत्याहार सिद्ध होने पर ही धारणा, ध्यान, समाधि की स्थितियां आ सकती है। अतः योगसिद्धि के लिए प्रत्याहार को जानना और अपनाना परमावश्यक है।

प्रत्याहार को समझने के लिए मेरी पुस्तक 'अष्टाग्ड़ योग प्रकाश' से सम्बन्धित अंश प्रश्नोत्तर रूप में नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं।-

प्रश्न - प्रत्याहार के क्या अर्थ हैं ?

उ०- प्रत्याहार - प्रति+हार। ज्ञानेन्द्रियों (श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और घ्राण) के स्वाभाविक आहार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध विषय हैं। इन्द्रियों का अपने विषयों से उपराग रहित (सम्बन्ध विच्छेद) होकर, शान्त होकर चित्त के (स्थिर) स्वरूप का अनुकरण करने लगना प्रत्याहार कहलाता है।

स्थूल विषयों के ज्ञान को ग्रहण कर ज्ञानेन्द्रियाँ मन तक पहुँचाती है, मन उन्हें बुद्धि को समर्पित करता है, बुद्धि उनके सम्बन्ध में निर्णय करती है और आवश्यक अंश को सूक्ष्म बनाकर (संस्कार रूप में) चित्त में संग्रहीत कर देती है। बुद्धि द्वारा किए गए निर्णयों को ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों तक अनुपालन हेतु पहुँचाने का कार्य भी मन ही करता है। जिस समय मन इन्द्रियों के साथ संयुक्त नहीं होता, वह चित्त में संग्रहीत संस्कारों को प्रत्यक्ष करने लगता है, जिसे स्मृति कहते हैं। किन्तु उपरोक्त मन-बुद्धि के समस्त व्यापार आत्मा की प्रेरणा से ही होते हैं, क्योंकि शरीर में आत्मा के अतिरिक्त अन्य सभी पदार्थ जड़ प्रकृति से ही बने हैं। साधक जब मन, इन्द्रियों को विषयों से हटाकर चित्त में समाहित कर लेता है, तो वह स्थिति प्रत्याहार कहलाती है। मन, इन्द्रियों की चंचलता को इस प्रकार शान्त कर देना धारणा, ध्यान और समाधि के लिए अनिवार्य है।

प्रश्न- मन-इन्द्रियों को अपनी स्वाभाविक क्रियाओं से विरतकर शान्त कर देना क्यों इतना आवश्यक है?

उ०- मन का स्वभाव है कि वह एक समय में दो या अधिक प्रकार के ज्ञान से सम्बद्ध नहीं हो सकता। (युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम् (न्यायदर्शन १-१-१६) ) अतः बिना इसे विषयों से उपराम किए इष्ट चिंतन, आत्म चिन्तन नहीं किया जा सकता। नदी या नहर की धारा को दूसरी दिशा में मोड़ने के लिए जिस प्रकार मेड़ बनाकर प्रवाह को रोकना आवश्यक है, उसी प्रकार विषय चिन्तन में रत मन को भी इष्ट चिन्तन की दिशा देनी होती है। वस्तुतः मन सभी इन्द्रियों का नेता है। जैसे मधुमक्खियां अपनी रानी का सदा अनुकरण करती हैं, उन्हें छोड़कर अन्यत्र नहीं जाती वैसे ही इन्द्रियाँ भी मन के साथ-साथ सक्रिय रहती हैं। अतः जैसे कछुआ अपने मुख, हाथ, पैरों को सिकोड़कर अन्दर छिपा लेता है। वैसे ही साधक को भी प्रत्याहार द्वारा अपनी सब इन्द्रियों और मन को विषयों से हटाकर अनतर्मुख कर लेना चाहिये। गीता (२-६१) में कहा गया है कि जिसी इन्द्रियां वश में हो जाती है, उसकी बुद्धि स्थिर अथवा प्रतिष्ठित हो जाती है।

प्रश्न- किन्तु मन तो इतना चंचल होता है कि उसे वश में करना झंझावात को रोकने से भी अधिक दुष्कर कार्य है। ऐसी स्थिति में मन को वश में कैसे किया जा सकता है ?

उ०- यह सत्य है कि चंचल मन को नियन्त्रित करना अति कठिन है, तथापि असंभव नहीं है। न जाने कितने योगी, ऋषि मन पर नियन्त्रण करके ध्यान, समाधि सिद्ध करते आए हैं, और आज भी कर रहे हैं। गीता में अर्जुन के इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए योगेश्वर कृष्ण स्पष्ट करते हैं कि अभ्यास और वैराग्य द्वारा मन, इन्द्रियों पर नियन्त्रण किया जा सकता है (गीता-६-३५)। योगदर्शन (१-१२) में भी यही बात कही गई है।

प्रश्न- क्या अभ्यास करने से मन को रोका जा सकता है ?

उ०- अवश्य, किन्तु यह अभ्यास दीर्घकाल पर्यन्त, निरन्तर और तप, ब्रह्मचर्य, विद्या तथा श्रद्धापूर्वक होना चाहिये। असंख्य योनियों में विभिन्न योगों के भोगने से जीवात्मा के चित्त पर पड़े हुए संस्कार अत्यन्त प्रबल हो जाते हैं। इन संस्कारों को रोकने, निर्बल बनाने तथा दग्धबीज अवस्था तक पहुँचाने के लिए ऐसा करना आवश्यक है। वस्तुतः योगाभ्यास को निरन्तर करने से ही लाभ होता है, अन्यथा बीच-बीच में छोड़ देने से योगों के संस्कार पुनः प्रबल हो जाते हैं। निरन्तर अभ्यास करने से शान्ति का अनुभव भी होता है, जिससे योगाभ्यास के प्रति रूचि तथा श्रद्धा भी बढ़ती है। योगाभ्यासी को सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि या मान-अपमान से प्रभावित नहीं होना चाहिये। इन्द्रियों के विषय भोगों से अनासक्त होकर ईश्वर प्राप्ति को ही परम लक्ष्य बनाना चाहिये। योग के बारे में ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करके ही (विद्यापूर्वक) अभ्यास करना फलदायी होता है, अन्यथा मिथ्या ज्ञान रखकर तप व श्रद्धा से किया गया अभ्यास भी निरर्थक और कभी-कभी हानिकारक भी हो जाता है।

अन्त में विशेष रूप से उल्लेखनीय चेतावनी यह है कि हठयोग की क्रियाओं से अपने शरीर व अंगों को कष्ट देना अथवा तांत्रिक क्रियाएं करना योगाभ्यास नहीं है, अतः ऐसा करने वाले (भले ही वे कुछ चमत्कार भी दिखलाएं) योगी नहीं कहे जा सकते हैं।

## आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध सभी जनपदों में कार्यरत् आर्य समाजें/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपना-अपना वार्षिक विवरण चित्र में भरकर दशांश, वेद प्रचार फण्ड, सूद कोटि, प्रतिनिधि एवं आर्य मित्र वार्षिक शुल्कादि सभा कार्यालय में जमा कराके रसीद प्राप्त कर लें, अन्यथा की स्थिति में नियमानुसार कार्यवाही सम्पन्न की जाएगी। वार्षिक विवरण सम्बन्धी चित्र संख्या-4 से 9 तक डाक से भेज दिये गये हैं।

**स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती**
सभा मन्त्री

धरोहर.....

# म० नारायण स्वामी जी महाराज

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

म० नारायण स्वामी जी महाराज का नाम सुनते ही हृदय में श्रद्धा मन में उत्साह पैदा होता है वाणी में उनको कुछ कहने की इच्छा हाथों को प्रेरित करती है कि कुछ लिखे जिससे इस महापुरुष के विषय में आर्य सज्जन जानकर कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सकें। ऐसे मनीषी के विषय में अपनी कुछ भावनायें समर्थित करते हुए कहना चाहूँगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनुकम्पा से आर्य समाज को ऐसे समर्पित बलिदानी मिले हैं जिसका उदाहरण अत्यन्त नहीं मिलता त्याग-तप-सेवा-समर्पण-विद्वत्ता के साथ-साथ चरित्र बल ऐसा कि मानो आर्य समाज जिसके नाम से पर्यायवाची बन गया हो उससे बढ़कर उपमा क्या हो सकती है उसका नाम है म० नारायण स्वामी जी आप वह एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में आये जिन्होंने न केवल आर्य जाति को अपितु समस्त हिन्दू जाति को प्रकाश प्रदान किये। समय-समय पर उन्हें कभी विचलित नहीं होने दिया आपकी कार्यशैली-कर्मठता- संगठन क्षमता- प्रत्युत्पन्न मनि- अपूर्व उत्साह - निर्भीकता- गुणग्रहित-विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देती है। आपने सैकड़ों लोगों के जीवन का उद्धार (कल्याण) किया है हजारों को शुद्ध करके आर्य बनाया है और लाखों व्यक्तियों को अपने उदात्त जीवन से प्रभावित किया है तभी तो इतने लम्बे काल तक आर्यो के हृदय में आप बस गए हैं। आपके भगीरथ की तरह जो प्रयास हुए वे आर्य समाज के इतिहास में स्वीर्णम अध्याय बन गए यथा आर्यवीर दल की स्थापना-आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का गठन-सर्वाभौम रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन एवं संचालन नियम - उपनियम बनाकर सुव्यवस्थित करना- गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की स्थापना आर्य वानप्रस्थ आश्रम ......... की स्थापना- नारायण आश्रम रामगढ़ तल्ला की स्थापना - कन्या गुरुकुल सासनी अलीगढ़-कन्या गुरुकुल देहरादून एवं हैदराबाद सत्याग्रह - सिन्ध सत्याग्रह आदि-आदि कार्य शुद्धि आन्दोलन पहाड़ी क्षेत्र में हरिजनों को आर्य शब्द प्रदान किया और सरकारी गजट से पास कराकर स्वीकृत कराते हुए व्यवहारीकरण प्रदान करना उस समय उन्हें समाज में सम्मान दिलाकर उनकी शिक्षा की व्यवस्था करना, आप जैसे महान् योगी का ही कार्य है। तत्कालीन समय की परिस्थितियां कितनी विषम थीं उन विषम परिस्थितियों के रहते हुए अंग्रेजों के राज्य में कितनी दृढ़ता से आपने एक निर्भीक रूप से साधिकार कार्य किया है आज अपना राज्य होते हुए सरकारी सुविधाये होते हुए भी उन सभी परम्पराओं की सुरक्षा नहीं कर पा रहे हैं आज उनके जीवन से प्रेरणा और संकल्प लेने का समय आ गया है आपका जीवन एक खुली पुस्तक थी आपके पिता श्री मूलतः जौनपुर जिले के थे लेकिन अलीगढ़ में सर्विस करते थे वहीं बसन्त पंचमी के दिन संवत १६२२ में आपका जन्म हुआ आपकी शिक्षा भी प्रारम्भ हुई पिता श्री ने आपको सदैव अपने पास ही रखकर संस्कारित किया आप उर्दू-फारसी और अंग्रेजी के अच्छे ज्ञात हो गए थे उच्च शिक्षा की व्यवस्था सर्वसुलभ नहीं थी २३ वर्ष की आयु में आपको मुरादाबाद कलेक्टर (डी.एम) के यहाँ पेशगार (क्लर्क) की नौकरी मिल गई तब से आप मुरादाबाद की एक विशेष पहिचान बन गए और उसी का मुख्य कारण आपको कार्य करने में सुलभता रही लखनऊ दिल्ली के बीच और उत्तर दिशा में पहाड़ी क्षेत्र जो वर्तमान में उत्तराखण्ड कहलाता है वहां जाकर अपना स्थान बनाना जनता की सेवाकरना आपके कार्यक्षेत्र का एक हिस्सा बन गया था उन दिनों सवारी के कोई विशेष साधन नहीं थे लेकिन आपने पैदल-घोड़ा गाड़ी खच्चर सवारी जैसे जहां जो प्राप्त रहा वे सभी आपके लिए सहयोगी रहे। कई बार पहाड़ी क्षेत्र में पैदल यात्रायें की हैं एक बार बर्फ पड़ने लगी कोई साधन नहीं था भवाली से रामगढ़ तल्ला तक आप पैदल ही गए आप ऐसे तपस्वी सन्त थे पत्थर और लोहे से भी कठोर थे आपके जीवन में मन्यु का प्राचुर्य था कोमलता किसी दीन दुःखी को देखकर आपका हृदय पिघल जाता था अतः आपके अनुशासन को देखकर लोग घड़ी मिलाते थे आपकी नियमित दिनचर्या अनुकरणीय थी।

आपके व्यवहार से प्रभावित होकर जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक डायसन पाल ने लिखा था- ''कि यदि भारत में आपको ऐसा व्यक्ति दिखाई दे जो सबकी सेवा के लिए तत्पर हो, जिसकी आंखों में प्रेम और सहानुभूति हो तो समझ लेना कि वह आर्य समाजी है''। आज हम इस आदर्श से कितने दूर चले गए उस समय लोग आपके नियमित जीवन-चरित्र और सेवा से इतने प्रभावित होते थे कि सभी आर्यो को वैसा ही समझते थे। आपने अपनी साधना से जो ऋषिकेश से ऊपर लक्ष्मण झूला के पास जाकर एक महात्मा से सीखी थी सभी आबाल वृद्ध को प्रभावित किया है। रीछ जैसे हिंसक जन्तुओं से कई बार मुकाबला होने पर आपने साहस पूर्वक अपनी अहिंसावृत्ति से उस पर विजय प्राप्त की। गर्मी के मौसम में गर्मी लगने पर धूप में जाकर बैठ जाते थे थोड़ी देर आकर छाया में बैठकर लिखने लगते थे सेवक को जिज्ञासा को समाधान करके बताया कि धूप में बैठकर गर्म होने से जब छाया में बैठकर लिखता हूं तो कुछ ठण्डा लगता है गर्मी कम हो जाती है। यह आपकी कठोर तपस्या थी १० मई १६२२ में वैशाख पूर्णिमा पर आपने सन्यास आश्रम में प्रवेश किया तभी से पुत्रैषणा-वित्तैषम-लोकैषणम त्यागने के लिए संकल्पित भाव से पुरुषार्थ करते रहे उसका प्रत्यक्ष प्रमाण आपके समक्ष है कि आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० के मंत्री एवं प्रधान जैसों पदों पर रहकर अपने स्थान पर अन्य आर्य युवको को प्रेरित किया- १४ वर्ष तक लगातार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष रहने पर स्वतः पद छोड़कर दूसरों को एक अवसर प्रदान किया। आपने मथुरा की जन्म शताब्दी पर इतना बड़ा भव्य कार्यक्रम आयोजित किया और मथुरा में आपने यह अपील कर दी कि पूरे मथुरा शहर में कोई भी दुकानदार तम्बाकू - बीड़ी - सिगरेट आदि की बिक्री न करें उसका पालन पूरी मथुरा नगरी ने किया था तथा किसी भी प्रकार की कोई घटना चोरी आदि नहीं हो पाई थी। आपकी संगठन शक्ति-कार्य कुशलता का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है। इसी प्रकार अजमेर की निर्वाण अर्द्धशताब्दी का कार्यक्रम विस्तृत हुआ आपके संरक्षण में सफल कार्यक्रम रहा वहाँ भी किसी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं हो पाई।

आप स्वाध्याय के आधार इतने विद्वान एवं लेखक बन गए कि समय-समय पर हमारे कल्याण हेतु साहित्य सृजन का कार्य किया आध्यात्मिक रूप में आत्मदर्शन - योगरहस्य - मृत्यु और परलोक उपनिषद भाष्यों की रचना की युवकों के लिए विद्यार्थी जीवन रहस्य एवं प्राणायाम विधि जैसी पुस्तकें लिखी ''कर्त्तव्यदर्पण'' यह पुस्तक हमने बचपन में पढ़ी थी प्रातः काल से सायंकाल तक की दिनचर्या की व्यवस्थित करते हुए आपने विधि सहित लिखा है शुद्धि संस्कार में कौन से मंत्र हो यह भी विनियोग आपने किया है। यौगिक क्रियाओं में आप विशेष दक्षता रखते थे। आप एक बार बीमार हो गए लखनऊ में आपको आपरेशन के लिए कहा गया आपने स्वीकार कर लिया डाक्टर ने पूछा आपको मूर्च्छित (बेहोश) करने के लिए हल्की औषधी देवे अथवा अधिक तो बोले कोई आवश्यकता नहीं है मुझे आप यह बतादेवं कि कितनी देर के लिए मुझे शरीर से पृथक रहना है उन्हें विश्वास नहीं हुआ फिर भी हल्की सी डोज दे डाली स्वामी जी ध्यानवस्थित हो गए कि पता ही नहीं चला आपरेशन कब हो गया इसी प्रकार टाँके कटने के समय भी आपने इसी विधि का प्रयोग किया। डा० एवं उनके छात्र इस बात से अधिक प्रभावित हुए कि आपरेशन के आरम्भ काल से समापन तक अन्तरंग अंगों की सफाई आदि के समय भ्री किंचित मात्र आप मानसिक रूपेण अव्यवस्थित नहीं हुए पूर्ण सतोगुण का ही यह प्रभाव था कि पूर्ण शान्त चित्त रहे। इससे छात्रों में अधिक श्रद्धा का भाव पैदा हुआ मन्युरसि मन्यु मपि धेहि को सार्थक करते हुए रामगढ़ तल्ला के लोगों की सहायतार्थ सदैव तत्पर रहते थे एक बार एक सिपाही ने एक दुकानदार को धमकी दे डाली कि आज रात को देखेगा बात स्वामी जी तक पहुँची स्वामी जी ने कई युवक एकत्रित करके उसकी दुकान के पास ही छुपाकर बैठ गए कि जैसे ही वह आये तो शोर कर देना हम उसे ठीक कर देगे रात्रि के २ बजे तक वहीं पर सावधान रहे जब कोई नहीं आया तब अपने घरों को गए। यह था आपका विशाल हृदय जो सभी के कल्याणार्थ सजग रहते थे हैदराबाद के सत्याग्रह से आपको प्रसिद्धि अधिक मिली क्योंकि सारी योजनायें आपकी थीं किस प्रकार हैदरअली को परास्त करना है गुलवर्गा जेल में रहते हुए पूरे सत्याग्रह का आप संचालन कर रहे थे आपको जेल अधिकारी भी सम्मान करते थे और पुलिस प्रशासन भी आपके व्यवहार से वे इतने प्रभवित हुए थे कि जब १६ अगस्त १६३६ को आप जेल से रिहा होने लगे तो विदाई के आँसू दोनों तरफ से थे सभी की आँखे नम थीं और बाहर आपका स्वागत किया गया शोलापुर दिल्ली-मुम्बई तथा आपके आश्रम रामगढ़ में भी विजयोत्सव मनाया गया यह आपका ही प्रभाव था।

आपके व्यवहार एवं सच्चाई से अंग्रेज अधिकारी भी प्रभावित थे एक बार कलैक्टर के यहाँ एक पत्रावली पर आपने संस्तुति कर दी थी तो निर्णय उसी के पक्ष में दे दिया था विपक्षी के कहने पर कि अभी तो बहस नहीं हुई आपने निर्णय इतना शीघ्र कैसे सुना दिया तो अंग्रेज अधिकारी डी. एम. का उत्तर था कि मुझे विश्वसनीय संस्तुति मिल गई है जो आर्य समाजी द्वारा है वे असत्य नहीं बोलते इसलिए निर्णय देना ही उचित है। यह आपके ही चरित्र और व्यवहार का सुपरिणाम था। आप वृद्धयज्ञों के ब्रह्म पद को भी स्वीकार कर लेते थे कार्याध्यक्ष होने पर भी प्रचार प्रसार हेतु पूरे देश में जाने पर भी हरिद्वार के कुम्भ मेले के अवसर पर १६३८ में २० मार्च से ६ अप्रैल तक वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में आप ब्रह्मपद पर प्रतिष्ठित होकर यज्ञोपरान्त वेदकथा ब्रह्म प्रवचन करते रहे आपकी योग्यता सरलता और कार्यकुशलता का द्योतक है। हैदराबाद सत्याग्रह की यातनाओं से आपका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता चला गया बताया गया कि वहाँ ज्वार बाजरे की रोटियां मिलती थी उसमें भी सीमेन्ट मिला देते थे जो सबके लिए अनुकूल नहीं रहीं कई लोग तो जेल में ही शहीद हो गए थे। श्री क्षितीश वेदालंकार जी ने विस्तार से वहाँ की कहानी लिखी है जो प्रेरणाप्रद है स्वामी जी का स्वास्थ्य गिरता गया और १५ अक्टूबर १६४६ को देश आजाद होने के बाद बरेली के अस्पताल मे अंतिम श्वांस लिया यह आर्य

शेष पेज ८ पर देखें....

# भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें

-डॉ. विवेक आर्य

काला पहाड़ - बांग्लादेश। यह नाम स्मरण होते ही भारत के पूर्व में एक बड़े भूखंड का नाम स्मरण हो उठता है। जो कभी हमारे देश का ही भाग था। जहाँ कभी बंकिम के ओजस्वी आनंद मठ, कभी टैगोर की ह्रदयम्य कवितायें, कभी अरविन्द का दर्शन, कभी वीर सुभाष की क्रांति ज्वलित होती थी। आज बंगाल प्रदेश एक मुस्लिम राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध है। जहाँ हिन्दुओं की दशा दूसरे दर्जे के नागरिकों के समान हैं। क्या बंगाल के हालात पूर्व से ऐसे थे?बिलकुल नहीं। अखंड भारतवर्ष की इस धरती पर पहले हिन्दू सभ्यता विराजमान थी। कुछ ऐतिहासिक भूलों ने इस प्रदेश को हमसे सदा के लिए दूर कर दिया। एक ऐसी ही भूल का नाम कालापहाड़ है। बंगाल के इतिहास में काला पहाड़ का नाम एक अत्याचारी के नाम से स्मरण किया जाता है। काला पहाड़ का असली नाम कालाचंद राय था। कालाचंद राय एक बंगाली ब्राह्मण युवक था। पूर्वी बंगाल के उस वक्त के मुस्लिम शासक की बेटी को उससे प्यार हो गया। बादशाह की बेटी ने उससे शादी की इच्छा जाहिर की। वह उससे इस कदर प्यार करती थी। वह उसने इस्लाम छोड़कर हिंदू विधि से उससे शादी करने के लिए तैयार हो गई। ब्राह्मणों को जब पता चला कि कालाचंद राय एक मुस्लिम राजकुमारी से शादी कर उसे हिंदू बनाना चाहता है। तो ब्राह्मण समाज ने कालाचंद का विरोध किया। उन्होंने उस मुस्लिम युवती के हिंदू धर्म में आने का न केवल विरोध किया, बल्कि कालाचंद राय को भी जाति बहिष्कार की धमकी दी। कालाचंद राय को अपमानित किया गया। अपने अपमान से क्षुब्ध होकर कालाचंद गुस्से से आग बबुला हो गया और उसने इस्लाम स्वीकारते हुए उस युवती से निकाह कर उसके पिता के सिंहासन का उत्तराधिकारी हो गया। अपने अपमान का बदला लेते हुए राजा बनने से पूर्व ही उसने तलवार के बल पर ब्राह्मणों को मुसलमान बनाना शुरू किया। उसका एक ही नारा था मुसलमान बनो या मरो। पूरे पूर्वी बंगाल में उसने इतना कत्लेआम मचाया कि लोग तलवार के डर से मुसलमान होते चले गए। इतिहास में इसका जिक्र है कि पूरे पूर्वी बंगाल को इस अकेले व्यक्ति ने तलवार के बल पर इस्लाम में धर्मातरित कर दिया। यह केवल उन मूर्ख, जातिवादी, अहंकारी व हठधर्मी ब्राह्मणों को सबक सिखाने के उद्देश्य से किया गया था। उसकी निर्दयता के कारण इतिहास उसे काला पहाड़ के नाम से जानती है। अगर अपनी संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर कुछ हठधर्मी ब्राह्मणों ने कालाचंद राय का अपमान न किया होता तो आज बंगाल का इतिहास कुछ ओर ही होता।

कश्मीर का इस्लामीकरण - कश्मीर शैव संस्कृति के ध्वजावाहक एवं प्राचीन काल से ऋषि कश्यप की धरती कश्मीर आज मुस्लिम बहुल विवादित प्रान्त के रूप में जाना जाता है। १६४७ के बाद से धरती पर जन्नत सी शांति के लिए प्रसिद्ध यह प्रान्त आज कभी शांत नहीं रहा। इसका मुख्य कारण पिछले ७०० वर्षो में घटित कुछ घटनाएँ हैं जिनका परिणाम कश्मीर का इस्लामीकरण होना हैं। कश्मीर में सबसे पहले इस्लाम स्वीकार करने वाला राजा रिंचन था। १३०१ ई. में कश्मीर के राजसिंहासन पर सहदेव नामक शासक विराजमान हुआ। कश्मीर में बाहरी तत्वों ने जिस प्रकार अस्त व्यस्तता फैला रखी थी, उसे सहदेव रोकने में पूर्णतः असफल रहा। इसी समय कश्मीर में लद्दाख का राजकुमार रिंचन आया, वह अपने पैत्रक राज्य से विद्रोही होकर यहां आया था। यह संयोग की बात थी कि इसी समय यहां एक मुस्लिम सरदार शाहमीर स्वात (तुर्किस्तान) से आया था। कश्मीर के राजा सहदेव ने बिना विचार किये और बिना उनकी सत्यनिष्ठा की परीक्षा लिए इन दोनों विदेशियों को प्रशासन में महत्वपूर्ण दायित्व सौंप दिये। यह सहदेव की अदूरदर्शिता थी, जिसके परिणाम आगे चलकर उसी के लिए घातक सिद्ध हुए। तातार सेनापति डुलचू ने ७०,००० शक्तिशाली सैनिकों सहित कश्मीर पर आक्रमण कर दिया। अपने राज्य को क्रूर आक्रामक की दया पर छोड़कर सहदेव किश्तवाड़ की ओर भाग गया। डुलचू ने हत्याकांड का आदेश दे दिया। हजारों लोग मार डाले गये। कितनी भयानक परिस्थितियों में राजा ने जनता को छोड़ दिया था, यह इस उद्हरण से स्पष्ट हो गया। राजा की अकर्मण्यता और प्रमाद के कारण हजारों लाखों की संख्या में हिंदू लोगों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ गया। जनता की स्थिति दयनीय थी। राजतरंगिणी में उल्लेख है- जब हुलचू वहां से चला गया, तो गिरफ्तारी से बचे कश्मीरी लोग अपने गुप्त स्थानों से इस प्रकार बाहर निकले, जैसे चूहे अपने बिलों से बाहर आते हैं। जब राक्षस डुलचू द्वारा फैलाई गयी हिंसा रुकी तो पुत्र को पिता न मिला और पिता को पुत्र से वंचित होना पड़ा भाई भाई से न मिल पाया। कश्मीर सृष्टि से पहले वाला क्षेत्र बन गया। एक ऐसा विस्तृत क्षेत्र जहां घास ही घास थी और खाद्य सामग्री न थी।

इस अराजकता का सहदेव के मंत्री रामचंद्र ने लाभ उठाया और वह शासक बन बैठा। परन्तु रिंचन भी इस अवसर का लाभ उठाने से नही चूका। जिस स्वामी ने उसे शरण दी थी उसके राज्य को हड़पने का दानव उसके ह्रदय में भी उभर आया और भारी उत्पात मचाने लगा। रिंचन जब अपने घर से ही बागी होकर आया था, तो उससे दूसरे के घर शांत बैठे रहने की अपेक्षा भला कैसे की जा सकती थी ?उसके मस्तिष्क में विद्रोह का परंपरागत कीटाणु उभर आया, उसने रामचंद्र के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। रामचंद्र ने जब देखा कि रिंचन के ह्रदय में पाप हिलोरें मार रहा है, और उसके कारण अब उसके स्वयं के जीवन को भी संकट है तो वह राजधानी छोड़कर लोहर के दुर्ग में जा छिपा। रिंचन को पता था कि आश्रय दे दिया। रिंचन ने भी बुलबुल शाह का ह्रदय से स्वागत किया। इस घटना के पश्चात कश्मीर का इस्लामीकरण आरम्भ हुआ जो लगातार ५०० वर्षो तक अत्याचार, हत्या, धर्मान्तरण आदि के रूप में सामने आया। शत्रु को जीवित छोड़ना कितना घातक सिद्ध हो सकता है?इसलिए उसने बड़ी सावधानी से काम किया और अपने कुछ सैनिकों को गुप्त वेश में रामचंद्र को ढूंढ़ने के लिए भेजा। जब रामचंद्र मिल गया तो उसने रामचंद्र से कहलवाया कि रिंचन समझौता चाहता है। वार्त्तालाप आरंभ हुआ तो छल करते हुए रिंचन ने रामचंद्र की हत्या करा दी। इस प्रकार कश्मीर पर रिंचन का अधिकार हो गया। यह घटना १३२० की है। उसने रामचंद्र की पुत्री कोटा रानी से विवाह कर लिया था। इस प्रकार वह कश्मीर का राजा बनकर अपना राज्य कार्य चलाने लगा। कहते है कि अपने पिता के हत्यारे से विवाह करने के पीछे कोटा रानी का मुख्य उद्देश्य उसके विचार परिवर्तन कर कश्मीर की रक्षा करना था। धीरे-धीरे रिंचन उदास रहने लगा। उसे लगा कि उसने जो किया वह ठीक नहीं था। उसके कश्मीर के शैवों के सबसे बड़े धर्मगुरू देवास्वामी के समक्ष हिन्दू बनने का आग्रह किया। देवास्वामी ने इतिहास की सबसे भयंकर भूल करी और बुद्ध मत से सम्बंधित रिंचन को हिन्दू समाज का अंग बनाने से मना कर दिया , रिंचन के लिए पंडितों ने जो परिस्थितियां उत्पन्न की थी वे बहुत ही अपमानजनक थी। जिससे उसे असीम वेदना और संताप ने घेर लिया। देवास्वामी की अदूरदर्शिता ने मुस्लिम मंत्री शमशीर को मौका दे दिया। उसने रिंचन को सलाह दी की अगले दिन प्रातः आपको जो भी धर्मगुरू मिले। आप उसका मत स्वीकार कर लेना। अगले दिन रिंचन जैसे ही सैर को निकला, उसे मुस्लिम सूफी बुलबुल शाह अजान देते मिला। रिंचन को अंततः अपनी दुविधा का समाधान मिल गया। उससे इस्लाम में दीक्षित होने का आग्रह करने लगा। बुलबुलशाह ने गर्म लोहा देखकर तुरंत चोट मारी और एक घायल पक्षी को सहला कर अपने यहां आश्रय दे दिया। रिंचन ने भी बुलबुल शाह का ह्रदय से स्वागत किया। इस घटना के पश्चात कश्मीर का इस्लामीकरण आरम्भ हुआ जो लगातार ५०० वर्षो तक अत्याचार, हत्या, धर्मान्तरण आदि के रूप में सामने आया।

सहला कर अपने यहां आश्रय दे दिया। रिंचन ने भी बुलबुल शाह का ह्रदय से स्वागत किया। इस घटना के पश्चात कश्मीर का इस्लामीकरण आरम्भ हुआ जो लगातार ५०० वर्षो तक अत्याचार, हत्या, धर्मान्तरण आदि के रूप में सामने आया।

यह अपच का रोग यही नहीं रुका। कालांतर में महाराज यगुलाब सिंह के पुत्र महाराज रणवीर सिंह गद्दी पर बैठे। रणवीर सिंह द्वारा धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना कर हिन्दू संस्कृति को प्रोत्साहन दिया। राजा के विचारों से प्रभावित होकर राजौरी पूंछ के राजपूत मुसलमान और कश्मीर के कुछ मुसलमान राजा के समक्ष आवेदन करने आये कि उन्हें मूल हिन्दू धर्म में फिर से स्वीकार कर लिया जाये। राजा ने अपने पंडितों से उन्हें वापिस मिलाने के लिए पूछा तो उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। एक पंडित तो राजा के विरोध में यह कहकर झेलम में कूद गया की राजा ने अगर उसकी बात नहीं मानी तो वह आत्मदाह कर लेगा। राजा को ब्रह्महत्या का दोष लगेगा। राजा को मजबूरी वश अपने निर्णय को वापिस लेना पड़ा। जिन संक्रीर्ण सोच वाले पंडितों ने रिंचन को स्वीकार न करके कश्मीर को ५०० वर्षो तक इस्लामिक शासकों के पैरों तले रूंदवाया था। उन्हीं ने बाकि बचे हिन्दू कश्मीरियों को रूंदवाने के लिए छोड़ दिया। इसका परिणाम आज तक कश्मीरी पंडित भुगत रहे हैं।

पाकिस्तान के जनक जिन्ना और इकबाल - पाकिस्तान। यह नाम सुनते ही १६४७ के भयानक नरसंहार और भारत होना स्मरण हो उठता हैं। महाराज राम के पुत्र लव द्वारा बसाई गई लाहौर से लेकर सिख गुरुओं की कर्मभूमि आज पाकिस्तान के नाम से एक अलग मुस्लिम राष्ट्र के रूप में जानी जाती हैं। जो कभी हमारे अखंड भारत देश का भाग थी। पाकिस्तान के जनक जिन्ना

शेष पेज ७ पर देखें....

# जीवन में यज्ञों का महत्व

विश्वेन्द्रार्य :

आदर्श गृहस्थों के द्वारा ही आदर्श परिवारों का निर्माण किया जाता है। जिन परिवारों के अन्दर यज्ञीय भावना होती है वे ही आदर्श परिवार कहलाने के अधिकारी होते हैं। यज्ञीय भावना का आशय है-यज्ञ की भावना, और यज्ञ की भावना का मुख्य आशय है स्वार्थ का त्याग और परोपकार (परमार्थ) का ग्रहण। जहाँ पर ये भावना है वे परिवार निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ करते हैं। इस यज्ञीय भावना का विकास करने के लिए ही परमेश्वर ने सृष्टि के आदिकाल में मानव की उत्पत्ति के साथ ही यज्ञ की भी उत्पत्ति की?परमेश्वर की आज्ञा है- प्राज्यं यज्ञं प्रणतया सखायः (ऋग्वेद १०/१०१/२) इस पावन प्रेरक यज्ञ को सभी जन मिल कर किया करें। बिना यज्ञ के उत्तम परिवारों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए हमारे परिवार भी ऐसे हों जहाँ पर (यज्ञं दुहानम्) नित्य यज्ञ होते रहें। यज्ञों के द्वारा ही हमारे परिवार अत्यन्त मनोहर, धन-धान्य से परिपूर्ण, हितकारी और रमणीय बनते हैं।

वैदिक संस्कृति के अनुसार यज्ञ हमारे परिवारों को सुख-समृद्धि, आयु, आरोग्यतादि प्रदान करने वाले हैं। ऋग्वेद के अनुसार -
उप क्षरन्ति सिन्धवो मयोभुव ईजानं च यक्ष्यमानं च धेनवः। पृणन्तं च पपुरिं च श्रवस्यवो घृतस्य धारा उपयन्ति विश्वतः।।
ऋ. १/१२५/४

अर्थात् यज्ञ करने वाले और यज्ञ की इच्छा करने वाले को गायें व सुख-शान्ति इस प्रकार प्राप्त होते हैं, जिस प्रकार नदियाँ स्वयमेव समुद्र में जा गिरती हैं। इतना ही नहीं अपितु उसे पालन करने की शक्ति, अन्न और यश, पुष्टि और तुष्टि जल की धाराओं के समान चारों ओर से प्राप्त होते हैं।

अथर्ववेद के अनुसार - यज्ञ इन्द्रमवर्धयत्। (२०/२७/५) यज्ञ से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। यज्ञानुष्ठान से ही सद्गुण, सुविचार, उत्तम आचार और सत्यज्ञान की प्राप्ति होती है।

यज्ञं तपः (तै. आ. १०/८/१) यज्ञ एक प्रकार का तप है। अतः प्रत्येक परिवार में यज्ञों का अनुष्ठान अवश्य ही होना चाहिए।

यज्ञ शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थो वाला है। संक्षेप में यदि कहना हो तो कह सकते हैं कि लोकोपकार के लिए किये जाने वाले सभी शुभ कार्य यज्ञ हैं। सकाम, निष्काम, नित्य, नैमित्तिक सभी कर्म यदि मन और हृदय को पवित्र करते हैं तो वे सार्थक हैं और यज्ञ हैं।

यज्ञ शब्द यज् धातु से बना है जिसका अर्थ वैयाकरणों और नैरुक्त आचार्यो के अनुसार देव पूजा, संगतिकरण और दान है।

देवपूजा-जिन कार्यो में देवों की पूजा अर्थात् जो विद्या, ज्ञान और धर्म के सेवन से वृद्ध, दिव्य गुणों से युक्त, महान तेजस्वी, अपने ज्ञान-विज्ञान के द्वारा संसार का उपकार करने वाले महान विद्वान, इस लोक और परलोक के सुख के लिए सर्वत्र विद्या, ज्ञान और धर्म का सदा उपदेश करने वाले हैं उनका मान-सम्मान, सेवा-सत्कार आदि करना तथा अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक तत्त्वों का यथायोग्य गुण संवर्धन करना।

संगतिकरण - अर्थात् विद्वानों, महात्मा पुरुषों का संग, परंब्रह्म के साथ आत्मा का संयोग वा प्राप्ति तथा अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक तत्त्वों के साथ यथायोग्य संगति-जिससे अनेकविध शिल्पकार्यो की सिद्धि होती है।

दान-संसार के प्राणियों के लाभ वा उत्कर्ष के लिए शुभ गुण, विद्या, सुख, सत्यधर्म और धन आदि का नित्य दान करना तथा जल, वायु आदि प्राकृतिक तत्त्वों की शुद्धि वा गुण संवर्धन के लिए अग्निहोत्र में घृतादि उत्तमोत्तम पदार्थो का प्रक्षेप किया जाना।

जिन कर्मो में विश्वकल्याणार्थ उक्त देव पूजा, संगतिकरण और दान किया जाता है वे सब यज्ञ शब्द से ग्रहण किये जाते हैं। ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने भी यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के द्वितीय मन्त्र के भाष्य में भी 'यज्ञ' शब्द का यही तात्पर्य लिखा है।

वैदिक संस्कृति में यज्ञों का संसार अत्यन्त के रूप में उपसंहृत कर सकते है। प्राचीन ऋषि महर्षियों ने इन पज्यमहायज्ञों के महत्व को अश्वमेधादिक यज्ञों से भी बढ़कर बताया है और इन्हें महायज्ञ के नाम से गौरवान्वित किया हैं समय और द्रव्य की दृष्टि से अश्वमेधादि यज्ञ चाहे कितने ही विशाल या बड़े क्यों न हों, लेकिन महत्व की दृष्टि से पञ्चमहायज्ञ इनसे बढ़कर ही हैं। गृहस्थ स्त्री-पुरुष अश्वमेधादि यज्ञों को करे अथवा न करे किन्तु पञ्चमहायज्ञों का करना अत्यन्त अनिवार्य कर्म है।

कुछ लोगों की मान्यता है कि हम तो अनेक प्रकार के दान-पुण्य-परोपकार, दीन-दुखियों की सेवा, गौ-सेवा आदि कार्य करते रहते हैं, यही हमारे यज्ञ और महायज्ञ हैं। तो निवेदन है कि ये सभी परोपकार के कर्म यज्ञ तो हैं लेकिन ये पञ्चमहायज्ञों का स्थान कदापि नहीं ले सकते और न ही पञ्चमहायज्ञों के न करने से होने वाली हानि और पाप की पूर्ति कर सकते हैं। जैसे किसी को बुखार आया है, वह सोचे मेरे पास खांसी की दवा है उसे खाने से बुखार उतर जायेगा। अथवा किसी को प्यास लगी है वह सोचे मेरे पास भोजन है उसे खाने से प्यास बुझ जायेगी, तो ये असम्भव है। जिस प्रकार बुखार के लिए बुखार की दवा, प्यास के लिए पानी की आवश्यकता है, उसी प्रकार सेवा के स्थान पर सेवा, दान के स्थान पर दान और पञ्चमहायज्ञों के स्थान पर पञ्चमहायज्ञ आवश्यक हैं। इसीलिए महर्षि मनु पञ्चैतांस्तु महायज्ञान् यथाशक्ति न हापयेत् (४/१६) का उद्घोष करते हुए किसी भी गृहस्थ को इन पञ्चमहायज्ञों के करने में प्रमाद न करने की आज्ञा प्रदान करते हैं।

ये पञ्चमहायज्ञ भौतिक तथा पारमार्थिक दोनों मार्गो के सेतु और सुख के यज्ञों को करते हुए परमेश्वर की कृपा, आनन्द और समस्त ऐश्वर्यो को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। महायज्ञैश्य यज्ञैश्य ब्राह्मीयं क्रियते तनुः- (मनु. २/२८) इन पञ्चमहायज्ञों तथा सोमयागों का अनुष्ठान करने वाला मनुष्य ब्रह्म प्राप्ति के योग्य हो जाता है।

ये पञ्चमहायज्ञ हमारी समस्त उन्नतियों के प्रतीक हैं। ब्रह्मयज्ञ- हमारी आत्मिक उन्नति, देवयज्ञ-पारिवारिक व सामुदायिक उन्नति, पितृयज्ञ-सामाजिक उन्नति, अतिथियज्ञ-राष्ट्रीय उन्नति तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ- सम्पूर्ण विश्व की उन्नति का प्रतीक है। इस प्रकार ये पाँचों महायज्ञ हमारी सभी प्रकार की उन्नतियों का प्रतीक और कल्याण के साधन हैं। यही कारण है कि वैदिक धार्मियों के यहाँ इन यज्ञों का प्रचलन चिरकाल से है और ये उनकी दिनचर्या के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग बने हुए हैं। कारण है कि वैदिक धार्मियों के यहाँ इन यज्ञों का प्रचलन चिरकाल से है और ये उनकी दिनचर्या के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग बने हुए हैं।

याद टिप्पणी -

१- सहयज्ञाः प्रजा सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजातिः।- गीता ३०/१०

२- होतृषदनं हरितं हिरण्ययम्।- अथर्व ७/६/६/१

३- धात्वशीद् यज्ञस्त्रिधाभवति- (१) विधाज्ञान धर्मानुष्ठानं वृद्धानां विदुषाम् ऐहिक पारमार्थिक सुखसम्पादनाय सत्करणम् (२) सम्यक् पदार्थ गुणसंमेलविरोध ज्ञान संगत्या शिल्प विद्या प्रत्यक्षीकरणम्, नित्यं विद्वत्समागमानुष्ठिानम् (३) विद्यासुख धर्मादिशुभ गुणानां नित्यं दानकरणमिति। - यजुर्वेद भाष्य अ. १, मं. २ (महर्षि दयानन्द सरस्वती)

(आदर्श परिवारों के आदर्श कर्त्तव्य कर्म से)

# फरिश्तई मलाला

नफरत करो न बेटियों से
है बेटियां होती ''मलाला''।
आवाज होती मां बाप की ये,
देती सदा अमृत का प्याला।।
मत बनो क्रूर इतने,
डरने लगे वो आहट से तेरी,
प्यार का अंदाज दो बस,
बन जायेगी दुनिया ये तेरी,
पहचान इनकी दर्द देती नहीं,
क्योंकि ये तो होती है ''मलाला''
आवाज हो.................।।
इम्तिहा तो लेकर के देखो
ये मर मिटेंगी तुम्हारे खातिर,
गर्ज इन्हें लालच न कोई,
फिर भी सताते इन्हें क्यूं आखिर,
दयालुता की होती ये मूरत,
क्योंकि ये तो होती है ''मलाला''
आवाज.............।।
आओ दें, आसमान इनको,
हर गर्दिश को देगी मौत ये,
मां बेटी बहन शक्ति की पूरक,
आजमा के देखो दें जिन्दगी ये,
ब खुशी नजरों से संवारो,
पहचानों यहां हर बेटी है ''मलाला''
आवाज..............।।
हिंद पाक की आवाम सुन लो,
ले लो नसीहत बेटी से अपनी
आवाज दी है आज बेटी ''मलाला''
मिल जाओ छोड़ गिले शिकवे अपने,
है वक्त अब भी जाग जाओ,
हो मां बाप तुम बेटी मलाला।
आवाज...........।।
बन जाओ मिसाल, दुनिया की यारो,
फक्र तुम पर सारी दुनिया करे,
हर लब पर हो बस बेटी ''मलाला''
बातें भी ''मलाला'' की वो करें,
बेटियों के ही बल पर ''सागर''
हर बेटी को वो कहता है ''मलाला''
आवाज............।।

डा. बी.पी.सागर
अंतरंग सदस्य आर्य प्र. सभा, उ.प्र.

## 13वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर छतरपुर एक्सटेंशन नई दिल्ली-७४ का १३वां वार्षिकोत्सव दिनांक ११, १२ व १३ दिसम्बर २०१५ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समाजसेवी ठा. विक्रम सिंह जी, विशिष्ट अतिथि श्री ज्ञानेन्द्र सिंह अवाना (डी.सी.पी. दिल्ली पुलिस) श्री अजय पाण्डेय (जज) श्री ध्रुव कुमार (एड.) व श्री विजन कुमार (एड.) थे।

आमंत्रित विद्वतजन स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, श्री धर्मपाल आर्य, श्री विजय आर्य, श्री अमन सिंह शास्त्री, आ. नरदेव यजुर्वेदी, श्री रविदेव गुप्ता, श्री विजय गुप्ता, श्री हरवंश लाल कोहली, श्री चतर सिंह नागर, आ. विरेन्द्र विक्रम, श्री अनिल आर्य, श्री मुकेश शास्त्री, पं. आरक्षित शास्त्री आदि के उपदेश भजन हुए।

यज्ञ की ब्रह्मा डा. नंदिता शास्त्री, यज्ञ संयोजक पं. प्रवीण शास्त्री थे। वेदपाठ पाणिनी कन्या महाविद्यालय बनारस की ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया।

मंत्री
ओमप्रकाश आर्य

## मुंबई में आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संरक्षण में आर्य वीर दल मुम्बई ने आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन रविवार दिनांक १५ से रविवार दिनांक २२ नवम्बर १५ तक आर्य समाज सांताक्रूज में उत्साहपूर्वक किया गया।

यज्ञ के उपरांत शिविर का उद्‌घाटन एवं ध्वजारोहण शिविराध्यक्ष श्रीमती यशबाला गुप्ता एवं महिला आर्य समाज सांताक्रूज की संयोजिका श्रीमती सुदक्षिणा शास्त्री के कर कमलों से हुआ।

इस शिविर की मुख्य शिक्षिका सुश्री सुव्रती आर्या देहरादून गुरूकुल एवं ज्योति आर्या बागपत मेरठ थी। मुम्बई के सभी आर्य समाजों के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए कन्याओं का उत्साहवर्धन किया।

रविवार दिनांक २२ नवम्बर को शिविर के समापन के कार्यक्रम में सबसे पहले वैदिक राष्ट्र गीत आ ब्रह्मन् का पाठ किया तत्पश्चात आचार्य धर्मधर आर्य ने ये टोली है मतवाली, आर्य वीरांगना वाली नामक जोशीला गीत सबको गवाकर सब को उत्साहित किया। इसके बाद शिविरार्थियों ने सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमिनमस्कार, नियुद्धम, जूडो कराटे, योगासन स्तूप, रस्सा मलखम्भ स्केटिंग शूटिंग इत्यादि का प्रदर्शन बहुत ही शानदार रहा जिसकी सभी दर्शकों ने प्रशंसा की। इस पूरे कार्यक्रम का संचालन दल के संचालक नरेन्द्र शास्त्री ने कुशलतापूर्वक किया।

आर्य समाज सांताक्रूज के महामंत्री एवं शिविर संरक्षक श्री संगीत आर्य ने कन्याओं को शिविर में भेजने के इस निर्णय के लिए सभी माता पिताओं को साधुवाद दिया।

आर्य वीर दल मुम्बई के संचालक आचार्य नरेन्द्र शास्त्री ने सभी आर्य समाजों में नियमित शाखायें लगाने की प्रेरणा दी।

### सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक जी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अच्छी बात है परंतु इस अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ क्या यह है कि जो आज करते है वही सत्य है। किसी भी चीज पर विचार के लिए स्थान होना चाहिए। तर्क ही किसी अंतिम सत्य का अंतिम उपाय है। किसी वस्तु की सिद्धि का आधार लक्षण और प्रमाण होते हैं। कोई भी व्यक्ति यदि यह कहता है कि यह मेरा धर्म है और इस धर्म पर यदि कोई मनुष्य मना करता है तो मैं उसे मार डालूंगा। यह मार डालूंगा ही उसके धर्म की सबसे बड़ी कमजोरी है। जो धर्म मार डालने की बात करता है डराने और धमकाने की बात करता है और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए दूसरों का खून बहाता है वस्तुतः वह धर्म नहीं है वह कोरा आतंक है और अधर्म है। ऐसा धर्म अपनी बात तो कहना चाहता है परंतु दूसरे का तर्क दूसरे के लक्षण और दूसरे के प्रमाणों पर बात भी नहीं करना चाहता। उनकी बात भी नहीं सुनना चाहता। बंगला देश और पाकिस्तान में हिंदुओं की संख्या इस स्तर पर कम हो गई है कि वे विनाश के कगार पर है। इधर भारत में मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है। मुस्लिम महिलायें अपनी अस्मिता के लिए भारत में ही संघर्ष कर रही है। इधर मुस्लिम धर्म गुरू और मुसलमानों के नेता कह रहे हैं शरिया हमारा धार्मिक कानून है। यह भारत की संसद से भी ऊपर है। हम इस पर किसी को भी सोचने तक न देंगे। जो सोचेगा उसे मार डालेंगे। क्या गांधी के अहिंसावादी देश में यह हिंसा का नाटक संभव है। केवल विचार करने भर से भी कोई किसी को मार डालने को उत्सुक हैं।

पं. भूदेव साहित्याचार्य
मो.- ६२१३१०७४५३
६८६१४१२६७७

## उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर अंधेरी मुबंई का २६वां वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक २४ दिसम्बर से रविवार २७ दिसम्बर २०१५ तक धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर विश्व शांति एवं पर्यावरण की शुद्धि के लिए २१ कुण्डीय चतुर्वेद शतक महायज्ञ का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान वेद प्रवक्ता आचार्य श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय थे।

आर्ष कन्या गुरूकुल दधिया (राजस्थान) की कन्याओं द्वारा वेदपाठ एवं सुप्रसिद्ध सुमधुर गायक श्री विजय आनन्द जी (फिरोजपुर) के भक्ति संगीत का आनन्द भी मिला।

हरीश आर्य

## मनुष्य में संस्कार व गुणों का आधान ही समाज कल्याण हैं

मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी वेदानन्द तीर्थ (१८६२-१६५६) वेदों के शीर्षस्थ विद्वान थे। उन्होंने जो साहित्य सृजित किया वह मनुष्य की उन्नति के लिए लाभकारी एवं उपादेय है। मनुष्य को शिक्षित, संस्कारित व गुणों से आपूरित करना ही उसको धार्मिक बनाना है। यदि मनुष्य विद्या व ज्ञान से युक्त नहीं होगा तो वह धर्म से विरत व पृथक ही कहा व माना जायेगा। धर्म व मत-मतान्तर पृथक पृथक हैं। धर्म मनुष्य के जीवन में सत्य गुणों अर्थात् सत्य विद्याओं व तदानुरूप आचरण के धारण को कहते हैं। मत व मतान्तर किसी मनुष्य व महापुरूष की कुछ धार्मिक व कुछ निजी शिक्षाओं के मानने को कहते हैं जो उनके व उनके दिए हुए नाम पर चलते हैं। मनुष्य व महापुरूषों की सभी शिक्षायें सत्य हों यह आवश्यक नहीं है। महापुरूष भी मनुष्य होने से अल्पज्ञ होते हैं। सब का नैमित्तिक ज्ञान न्यून व अधिक होा है। अतः उनकी शिक्षायें भी अल्पज्ञता के कारण सत्य व असत्य दोनों श्रेणियों की हुआ करती हैं। ईश्वरीय ज्ञान वर्तमान में चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद ही पूर्ण सत्य ज्ञान है। अतः शिक्षा व विद्या को प्राप्त करते हुए यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि पढ़ा हुए ज्ञान व विद्या वेद सम्मत है अथवा नहीं?वेद सम्मत का ग्रहण व जो वेद सम्मत नहीं है, उसका त्याग करना ही मनुष्य का धर्म है। सत्य ज्ञान, विद्या व शिक्षा को पढ़कर व धारण कर ही मनुष्य धार्मिक बनता है और इसके विपरीत वह धर्मविहीन पशु के समान रहता है। स्वामी जी ने इसका अपनी ज्ञानप्रसूता लेखनी से बहुत ही प्रभावशाली वर्णन किया है जिसे पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

मनुष्य यतः सामाजिक प्राणी है अतः उसको उत्कृष्ट बनाने के यत्न को समाज-हितकारी कर्तव्य या धर्म कहना न्यायसंगत है। इसीकारण गृहयज्ञ-संस्कार मनुष्य के साथ मनुष्य समाज के भी अत्यन्त उपकारक है। समाज मनुष्यों का समुदाय है। यदि किसी मकान में लगा सामान ईट, चूना गारा, सीमेंट, काष्ठ, लोहा, निकृष्ट कोटि का हो तो वह मकान अवश्य निकृष्ट घटिया होगा। इसी भांति यदि समाज के घटक अवयव मनुष्य घटिया होंगे तो समाज भी घटिया होगा, बढ़िया नहीं हो सकेगा। अतः सिद्ध हुआ कि मनुष्य व व्यक्ति के संस्कार करना, उसमें उत्कृष्ट गुणों का आधान करना वास्तव में समाज का कल्याण करना है।

मनुष्य और पशु चेतना के कारण भोजन, मैथुन, भय, निद्रा आदि में समान है। सत्य बात तो यह है कि इन बातों में मनुष्य पशुओं की समानता नहीं कर सकता। क्या कोई भोजन में हाथी की समानता कर सकता है?मनुष्य में विशिष्टता धर्म के कारण है। कहा भी गया है- धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समाना - मनुष्य में धर्म ही पशुओं से अधिक विशेष है। धर्म से हीन मनुष्य श्रृंगपुच्छविहीन पशु है। धर्म का मूल विद्या एवं बुद्धि है। इसीलिए किसी ने कहा है- विद्याविहीनः पशुः - विद्या विहीन मनुष्य मनुष्य नहीं प्रत्युत पशु है।

मनुष्य मनुष्य बने, पशु न रहे इसके लिए विद्या से उसे अवश्य सुभूषित करना चाहिए।''

हम आशा करते है कि पाठक स्वामी जी के विचारों से सहमत होंगे व इसे स्वीकार कर वेदाध्ययन में प्रवृत्त होंगे। वेदाध्ययन में प्रवृत्त होने के लिए आरम्भ में सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का अध्ययन लाभकारी होता है। यह दोनों वेदाध्ययन के मार्गदर्शक ग्रंथ है व भूमिका का कार्य करते हैं।

१६६, चुक्खूवाला-२
देहरादून- २४८००१

## आर्य समाज श्री गंगानगर राजस्थान का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज श्री गंगानगर राजस्थान का वार्षिकोत्सव दिनांक २६ से २६ दिसम्बर १५ तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। उत्सव में सामवेद पारायण यज्ञ हुआ। वैदिक प्रवक्ताओं व भजनोपदेशकों के उपदेशों व भजनों का श्रोताओं पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा।

### बृहदधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की वार्षिक बृहद अधिवेशन दिनांक-31 जनवरी, 2016 रविवार (माघ कृष्ण सप्तमी) को प्रातः 11 बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, (नारायण स्वामी भवन), 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा। एजेण्डा एवं विस्तृत कार्यक्रमों की रूप-रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

पृष्ठ ४ का शेष.....
का नाम कौन नहीं जानता। जिन्ना को अलग पाकिस्तान बनाने का पाठ पढ़ाने वाला अगर कोई था तो वो थासर मुहम्मद इकबाल। मुहम्मद इकबाल के दादा कश्मीरी हिन्दू थे। उनका नाम था तेज बहादुर सप्रु। उस समय कश्मीर पर अफगान गवर्नर अजीम खान का राज था। तेज बहादुर सप्रु खान के यहाँ पर राजस्व विभाग में कार्य करते थे। उन पर घोटाले का आरोप लगा। उनके समक्ष दो विकल्प रखे गए। पहला था मृत्युदंड का विकल्प दूसरा था इस्लाम स्वीकार करने का विकल्प। उन्होंने धर्म परिवर्तन कर इस्लाम ग्रहण कर लिया। और अपने नाम बदल कर स्यालकोट आकर रहने लगेगा। इसी निर्वासित परिवार में मुहम्मद इकबाल का जन्म हुआ था। कालांतर में यही इकबाल पाकिस्तान के जनक जिन्ना का मार्गदर्शक बना।

मुहम्मद अली जिन्ना गुजरात के खोजा राजपूत परिवार में हुआ था। कहते हैं उनके पूर्वजों को इस्लामिक शासन काल में पीर सदरूद्दीन ने इस्लाम में दीक्षित किया था। इस्लाम स्वीकार करने पर भी खोजा मुसलमानों का चोटी, जनेऊ आदि से प्रेम दूर नहीं हुआ था। इस्लामिक शासन गुजर जाने पर खोजा मुसलमानों की द्वारा भारतीय संस्कृति को स्वीकार करने की उनकी वर्षो पुरानी इच्छा फिर से जाग उठी। उन्होंने उस काल में भारत की आध्यात्मिक राजधानी बनारस के पंडितों से शुद्ध होने की आज्ञा मांगी। हिन्दुओं का पुराना अपच रोग फिर से जाग उठा। उन्होंने खोजा मुसलमानों की मांग को अस्वीकार कर दिया। इस निर्णय से हताश होकर जिन्ना के पूर्वजों ने बचे हुए हिन्दू अवशेषों को सदा के लिए तिलांजलि दे दी। एवं उनका मन सदा के लिए हिन्दुओं के प्रति द्वेष और घृणा से भर गया। इसी विषाक्त माहौल में उनके परिवार में जिन्ना का जन्म हुआ। जो स्वाभाविक रूप से ऐसे माहौल की पैदाइश होने के कारण पाकिस्तान का जनक बनाया। अगर हिन्दू पंडितों ने शुद्ध कर अपने से अलग हुए भाईयों को मिला लिया होता तो आज देश की क्या तस्वीर होती। पाठक स्वयं अंदाजा लगा सकते है। अगर सम्पूर्ण भारतीय इतिहास में ऐसी ऐसी अनेक भूलों को जाना जायेगा तो मन व्यथित होकर खून के आँसू रोने लगेगा। संसार के मागदर्शक, प्राचीन ऋषियों की यह महान भारत भूमि आज किन हालातों में हैं, यह किसी से छुपा नहीं हैं। क्या हिन्दुओं का अपच रोग इन हालातों का उत्तरदायी नहीं हैं ?आज भी जात-पात, क्षेत्र-भाषा, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, छोटा-बड़ा आदि के आधार पर विभाजित हिन्दू समाज क्या अपने बिछुड़े भाईयों को वापिस मिलाने की पाचक क्षमता रखता हैं?यह एक भीष्म प्रश्न है?क्यूंकि देश की सम्पूर्ण समस्यायों का हल इसी अपच रोग के निवारण में हैं। एक मुहावरा की बोये पेड़ बबुल के आम की चाहत क्यों भारत भूमि पर सटीक रूप से लागु होती हैं।

इतिहास के पृष्ठ से-

## बिस्मिल की वीर माता

काकोरी क्रांतिकारी षडयंत्र में १६ दिसम्बर सन् १६२७ को प्रातः ६ बजे भारत माता की जय वन्दे मातरम् और ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त हो के नारे लगाते हुए श्री रामप्रसाद जी बिस्मिल फाँसी के फंदे पर निर्भय झूल गए।

इससे ठीक एक दिन पूर्व दिनांक १८ दिसम्बर सन् १६२७ ई. को उनकी माँ तथा उनके पूज्य पिताजी गोरखपुर ज़िला जेल में अपने पुत्र से अंतिम बार मिलने आए।

वीरवर रामप्रसाद जी को अपने माता-पिता के अंतिम-दर्शन के लिए जेल के मुख्य द्वार पर लाया गया, तो माँ को देखकर उनकी आँखों में सहसा आँसू आ गए। उनकी दोनों आँखें बरबस भर आई।

रामप्रसाद जी की आँखों में आँसू की बूंद देखकर उनकी माँ सहसा चीख उठी। सिंहनी के समान वह बोली -

राम! यह मैं क्या देख रही हूँ ?आज तुम्हारी आँखों में आँसू ?सुनो, बाहर जितने भी लोग मुझसे मिलने आते रहे हैं, मैंने सीना तानकर उनसे गौरव से कहा है कि- मेरा बेटा अपनी मातृभूमि भारत देश के लिए फाँसी चढ़ने जा रहा है। तुम लोग देख लेना, मेरा बेटा हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ेगा, वह रोएगा नहीं। पर ..... पर.... हाय! आज तुम्हारी इन बड़ी-बड़ी रक्तरंजित आँखों में ..... हाय ये आँसू-आँसू देखकर अरे बिस्मिल मैं शर्म से मरी जा रही हूँ ओह!''

हतप्रभ रामप्रसाद का अपनी माता को दिया गया उत्तर भी उतना ही ऐतिहासिक था।

बिस्मिल ने करबद्ध कहा - माँ तुम गलत समझ रही हो, माँ! ये तो खुशी के आँसू हैं। हाँ, भला कहो तो तुझ-सी-वीर माता मुझे कहाँ मिलेगी, जो फाँसी से एक दिन पूर्व अपने लाड़ले बेटे की आँखों में अश्रुकण देखकर उसे डाँटे। अहोभाग्य! हे माता! सुनो, भगवान से मेरी अन्तिम प्रार्थना यही है कि, पुनः मेरा जन्म ऐसी ही वीर माता की कोख से हो।''

हम ऐसा जीवन जीने की कोशिश करें कि जब हमारी मौत की घड़ी आ पहुँचे तो हर कोई अफसोस करे।

मार्क ट्वेन

## क्रान्तिकारी अशफ़ाक का मन्दिर प्रेम

अशफ़ाक के हृदय में धर्मान्धता लेशमात्र के लिए भी न थी। उनके निकट मन्दिर तथा मस्जिद में कोई भेद-भाव नहीं था। उसी दिन जब शाहजहाँपुर में हिन्दु-मुसलमानों में झगड़ा हो रहा था तो आप आर्यसमाज मन्दिर में ''बिस्मिल जी के साथ ठहरे हुए थे। मुसलमान के एकदल को समाज मन्दिर पर हमला करने आते देख आप पिस्तौल लेकर बाहर आ गए और कहा - मुसलमानों मैं एक कट्टर मुसलमान हूँ, किन्तु फिर भी मुझे इस मन्दिर की एक-एक ईट प्राणों से अधिक प्यारी है। मेरे निकट इसमे तथा मस्जिद में भेद नहीं है। यदि तुम्हें मज़हब के नाम पर झगड़ा ही करना है, तो बाज़ार में जाकर लड़ो। यदि किसी ने भी इस पवित्र संस्थान की ओर आंख उठाई तो गोली का निशाना बनेगा।''

**यह देखकर किसी ने भी आगे बढ़ने का साहस न किया और वापिस चले गए।**

**यदि मैं अन्धे को कुएँ के सामने देखूँ तो मेरा चुप रहना पाप है। - शेख सादी**

-संकलत

## 'संकल्पाग्नि'

-देवनारायण भारद्वाज

बनकर नर वर संकल्प आग।
तू जाग जाग हे आग जाग।।
मत बन्द मन्द हो हृदय आग।
तू हो बुलन्द अभ्युदय आग।
हम तपें थकें या सो जायें,
तू बनकर जगना ध्येय माग।
हो कंटक पथ या सुमन मार्ग।
तू जाग जाग हे आग जाग।।१।।
जाग्रत स्वप्न सुनिद्रा हो।
राही की कोई मुद्रा हो।
चिन्तना रूप हे अग्नि धूप,
साधक की शक्ति समग्रा हो।
हो फणिक नाग या मणिक राग।
तू जाग जाग हे अग्नि जाग।।२।।
जैसे तू हमें सुलाये रे।
आनन्द ऊर्जा लाये रे।
सद्धर्म दौड़ के लिये अग्नि,
वैसे ही हमें उठाये रे।
दे त्याग-तेज भरपूर याग।
तू जाग जाग हे अग्नि जाग।।
स्रोत - अग्ने त्व, सु जाग्रहि वय, सुमन्दिषीमहि।
रक्षाणोऽअप्रयुच्छन् प्रबुधेनः पुनस्कृधिः।।
(यजु. ४.१४)

## 'पुनरागम'

सुन्दर नर तन मन मधुबन को।
प्रभुवर ! पुनः पुनः दो हमको।।
फिर से दीर्घ आयु सुख पायें।
फिर से प्राण ओज अपनायें।
फिर से आत्म बोध रस लायें।
दृष्टिकोण के मंगल धन को।
प्रभुवर ! पुनः पुनः दो हमको।।१।।
होवें श्रोज श्रोजीय प्यारे।
तजकर भौतिक भोग पुकारें।
फिर से सुन्दर श्रेय सुधारें।
विज्ञान विमल के दर्पण को।
प्रभुवर ! पुनः पुनः दो हमको ।।२।।
कर दुरित दूर उर करो मुखर।
हो भाव अहिंसक सर्व सुखर।
हे जठर अनल हे वैश्वानर।
कर्मठ निष्ठा के नर पन को।
प्रभुवर ! पुनः पुनः दो हमको ।।३।।
स्रोत - पुनर्मनः पुनरायुर्मऽ आगन्पुनः प्राणः
पुनरात्यामऽ आगन्पुनश्चक्षुःपुनः
श्रोजमऽआगन्। वैश्वानरोऽ अदब्ध स्तून पाऽ अग्निर्नः
पातु दुरितावधात्।। (यजु. ४.१५)

## आर्य समाज रतनलाल नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया

आर्य समाज मंदिर रतनलाल नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक २० दिसम्बर २०१५ को स्कालर्स प्लेवेज विद्यालय (निकट जैन मंदिर) में प्रातः काल ८ बजे से सायं ३ बजे तक बड़े ही उल्लासपूर्वक मनाया गया।

आचार्य श्री विजय देव नैष्ठिक तथा पं. रवीन्द्र जी आदि विद्वान व भजनोपदेशक के उपदेश व भजन हुए। ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

काफी बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी और प्रवचन व भजन का रसास्वादन किया।

मंत्री
विनोद कुमार आर्य

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

# श्रीमती गिरजा त्रिपाठी का सम्मान : नारी को सम्मानित करने का मार्गदर्शक

श्रीमती गिरजा त्रिपाठी मां विंध्यवासिनी महिला प्रशिक्षण एवं समाज सेवा संस्थान देवरिया की अध्यक्ष एवं उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. को रूपायन अचीवर एवार्ड से दैनिक अमर उजाला ने दिनांक १६-१२-१५ को कानपुर के आफिसर क्लब में सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा एवं मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने उनके इस सम्मान पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भेंट की। उनके सम्बन्ध में अमर उजाला ने अपनी रूपायन पत्रिका में उनकी परिचयात्मक लेख प्रकाशित किया है जिसे मैं यहां आर्यजनों के लाभार्थ अविकल प्रकाशित कर रहा हूँ। -सम्पादक

## अच्छी आदत की जमा-पूंजी

देवरिया की गिरिजा त्रिपाठी के पास कोई बड़ा बैंक बैलेंस तो नहीं था, एक अच्छी आदत की जमा-पूंजी जरूर थी-दूसरों की मदद करना। वह अच्छी आदत अब उनके एक अभियान का हिस्सा है।

ससुराल से पीड़ित कोई लड़की, घर से निकाली गई कोई बुजुर्ग या कोई असहाय मां की मदद करना, देवरिया की गिरिजा त्रिपाठी के लिए ये सब जिंदगी का मकसद है। किसी महिला को मुसीबत में देखकर वह ढाल की तरह सामने खड़ी हो जाती हैं और पीड़ित महिलाओं के लिए तब तक मदद की मुहिम चलाती रहती हैं, जब तक उनकी समस्या का समाधान न हो जाए। १९८८ से जारी अपनी मुहिम से गिरिजा अब तक ढेर सारी महिलाओं को आश्रय दे चुकी हैं, कई महिलाओं को रोजगार दिला चुकी हैं। और ये सब वह कर पाई हैं अपनी एक अच्छी आदत की बदौलत, जो बचपन से उनकी जमा-पूंजी थी दूसरों की मदद करना।

पिता फौज में थे। १९७१ की लड़ाई के बाद असम में गिरिजा ने कई ऐसी महिलाओं के दर्द को नजदीक से देखा था, जिनके अपने युद्ध में मारे गये थे या युद्ध की आंच उन महिलाओं के परिवार तक पहुंची थी। तभी मन-हीमन निर्णय लिया कि महिलाओं के लिए कुछ करना है। एमए (मनोविज्ञान) से कर चुकी गिरिजा के लिए यह काम इतना आसान भी न था, लेकिन महिलाओं को जागरूक करने की जो मुहिम गिरिजा ने शुरू की, उसे रूकने नहीं दिया। उनके हौसले से अन्य महिलाएं भी उनके साथ जुड़ती गई। इसके लिए उन्होंने १९६३ में 'मां विंध्यवासिनी महिला प्रशिक्षण समाज सेवा संस्थान की नींव रखी। आज वह महिला शिक्षा, स्वरोजगार प्रशिक्षण, घर से निकाली गई बुजुर्गों को वापस परिवार में शामिल कराने, भटकी हुई बालिकाओं को आश्रय देने, बालिकाओं की शादी कराने आदि कार्य निस्वार्थ भाव से कर रही हैं। यही नहीं असहाय महिलाओं के लिए वे २००२ से अल्पवास गृह चला रही हैं, वहां स्वरोजगार प्रशिक्षण देने के साथ-साथ आश्रय भी दिया जाता है।

गिरिजा अपने खर्च पर वह अब तक ४५ बेटियों का विवाह करा चुकी हैं। जेल में बंद असहाय व जरूरतमंद महिलाओं के लिए भी वह देवरिया जेल में काउंसलिंग का काम कर रही हैं। कई ऐसी महिलाएं, जिन्हें परिवार ने त्याग दिया था या वह विधवा होने के चलते घर से निकाल दी गई थीं, गिरिजा ने उनकी फिर से शादी करवाकर उनका घर बसाया है या फिर परिवार में उन्हें दोबारा शरीक किया है। दूसरों की मदद करने की यह आदत अब भी उनकी जमा-पूंजी है।

## आर्य समाज सदर बाजार झांसी द्वारा ऋषि निर्वाण पर्व पर गायत्री यज्ञ

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष की आश्विन पूर्णमासी से कार्तिक अमावस्या तक तदनुसार दिनांक २७ अक्टूबर से १२ नवम्बर १५ तक आर्य समाज सदर बाजार झांसी में ऋषि निर्वाण पक्ष में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ८:३० बजे तक विभिन्न यजमानों के यज्ञमानत्व में गायत्री यज्ञ का आयोजन किया गया। अंतिम दिवस १२ नवम्बर १५ को प्रातःकाल ७ बजे से पूर्वान्ह ११ बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी। इस आयोजन के आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी तथा आर्य पुरोहित श्री देवव्रत आर्य थे।

वेदारी लाल आर्य, झांसी

पृष्ठ ४ का शेष.....

समाज के लिए दुःखद समाचार था स्वामी स्वतः न्मानन्द जी लौह पुरुष थे स्वामी भी आपके सहयोगी रहे स्वामी श्रद्धानन्द जी आपका बहुत मान करते थे बरेली को आपके अन्तिम समय सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ आपकी अनत्येष्टी स्थल पर यज्ञशाला बनाई है। प्रत्येक आर्य उसके दर्शनार्थ वहाँ जाता है।

आपका जन्म सार्थक हुआ - आपकी मृत्यु भी सार्थक हुई आपका चिन्तन-मनन एक-एक क्षण आर्य समाज के लिए था अपनी सर्विस में बड़े पद पर जाने को आर्य समाज के कार्य में बाधक मानकर उस प्रस्ताव को ठुकरा देना क्या यह कोई सामान्य बात है ?युवावस्था में धर्मपत्नी का देहान्त हो जाने पर परिवार से पूर्व मुक्ति पा लेना क्या यह सामान्य बात है ?बड़े-बड़े प्रलोभन में न फंसकर सदैव सत्यमार्ग पर आचरण करना ही तो आपके उदान्त चरित्र का प्रमाण पत्र है। आर्य जगत् को ऐसे विद्वान एवं कर्मयोगी पर गर्व है। महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के पश्चात् आर्य समाज के संगठन को सजीवता- सुरूपता प्रदान करने में और उसे भविष्य की धारा पर मानचित्र उतारने में मनुस्मृति की तरह आपका योगदान सदैव सर्वोच्च रहेगा। मैं ऐसे महामनीषी के चरणों आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की ओर से शतशः नमन करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हमें भी इसी प्रकार कर्म करने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करो।

गुरुकुल पूठ
गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो. ९८३७४०२१६२

स्वास्थ्य चर्चा-

## गुणकारी लौंग

लौंग का प्रयोग विविध रूप में होता है। मुख शुद्धि, मसाला के साथ साथ पान में भी इसका उपयोग होता है। लौंग का औषधि के रूप में विशेष महत्व है और विविध रोगों पर यह कारगर सिद्ध होती है।

तुतलाकर बोलने वाले लोगों के लिए लौंग का प्रयोग परम गुणकारी साबित होता है। पिस्ता की गिरी २० ग्राम, बादाम की गिरी ५० ग्राम, चांदी का वर्क १० ग्राम, दालचीनी १० ग्राम लौंग १० ग्राम, केसर ५ ग्राम, शहद २० ग्राम इन सबको बारीक पीस लें तथा कांच के किसी डिब्बे में रख दें। इस औषधि को उसे ५ ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सुबह शाम फांके। इससे एक माह में ही तुतलाकर बोलना ठीक हो जाता है।

लौंग के महीन चूर्ण को नींबू के रस में मिलाकर दांतो पर मलें। इससे दांतो का दर्द ठीक हो जाता है। मसूढ़े की सूजन भी इससे कम हो जाती है। दांतों के बीच में एक लौंग दबा लेने से भी दूर हो जाता है।

काली मिर्च काली तुलसी के पत्ते और लौंग इन तीनों को ६-६ ग्राम लेकर बारीक पीस लें और मटर के दाने के बराबर गोलियां बना लें। इन गोलियों को मुंह में डालकर चूसने से खांसी दूर होती है।

टमाटर के रस के साथ शक्कर, इलायची के दाने, लौंग, काली मिर्च का थोड़ा चूर्ण मिलाकर सेवन करने से उल्टियां रूक जाती है।

पेट की गैस तथा दर्द से छुटकारा पाने के लिए लौंग, जीरा, एवं अजवाइन बराबर मात्रा में तवे पर भूनकर चूर्ण बना लें और उसमें आधा चम्मच पिसा काला नमक भी मिला दें। एक छोटा चम्मच यह चूर्ण आधा कप गुनगुने पानी के साथ पीने से उपरोक्त शिकायतें दूर हो जाती हैं।

पायरिया एवं मुख की दुर्गंध में तुलसी की पत्तियां, कपूर, लौंग पीसकर गोलियां बना लें और दांतों के नीचे दबा लें। इससे मुख की दुर्गंध दूर होती है और पायरिया भी नष्ट होता है। नपुंसकता और सुस्ती दूर करने के लिए एक बड़ा मीठा सेब लें और उसमें १० ग्राम लौंग चुभो दें। चीनी मिट्टी के बर्तन में आठ दिन तक इस सेब को यूं ही रखा रहने दें। नौवें दिन से दो लौंग खूब बारीक पीसकर घोंट लें और उपर से गुनगुना दूध पी लें। यह प्रयोग सुबह खाली पेट करें। इससे नपुंसकता दूर होकर मर्दानगी आती है और सुस्ती भी दूर होती है। इसका प्रयोग कम से कम २० दिन तक करने से खास लाभ होता है। सेवन काल में या यूं भी चावल और बादी चीजें न खायें।

लौंग के प्रयोग से शरीर के अन्दर की वायु नलियों का संकोच और विकास और उससे होने वाली पीड़ा दूर होती है।

मुंह लौंग रखकर चूसने से खांसी का दौरा कम हो जाता है, कफ आराम से निकलता है। खांसी, दमा , श्वांस रोगों में लौंग के सेवन से लाभ होता है।

बच्चों की पसली चलने पर दूध में पांच तुलसी की पत्तियां और एक लौंग मिलाकर पिलाने से बच्चों का पसली चलना बंद हो जाता है।

## शोक समाचार

श्री उमेश चन्द्र वर्मा सदस्य आर्य समाज एवं कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. श्री सियाराम वर्मा के अभिन्न मित्र का ३८ वर्ष की अल्पायु में दिनांक २५.१२.१५ को रात्रि ६ बजे तीव्र हृदयाघात से अस्पताल ले जाते मार्ग में ही निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगतात्मा को सद्गति एवं उनके दुःखी परिवार को मनःशान्ति व धैर्य प्रदान करें।

## ग्राहकों से अनुरोध

आर्यमित्र साप्ताहिक के सभी ग्राहकों से अनुरोध है कि जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है वह नये वर्ष के लिए अपना शुल्क अविलम्ब भेजें। आपके सहयोग से ही हम आर्यमित्र का सम्पादन व प्रकाशन समय से करने में समर्थ रहेंगे।

-सम्पादक

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफसेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।